6

रघुवंश- राजा दिलीप के गुणों का वर्णन-2

इस पाठ मे हम ग्यारह श्लोकों को पढ़ते हैं। यहाँ कवि सर्वप्रथम सूर्यवंशीय महाराज दिलीप के प्रजावात्सल्य का वर्णन करते हैं। उसके बाद क्रमशः दिलीप में जो राजोचित गुण थे उन गुणों का वर्णन करते हैं। उसके बाद दिलीप की पत्नी का उल्लेख करके उसके गुणों का वर्णन करते हैं। दिलीप और सुदक्षिण को विवाह के बहुत वर्ष बीत जाने पर भी सन्तान की प्राप्ति नहीं हुई। अतः सन्तान के अभाव से बहुत दुःखी थे। इस प्रकार सन्तान प्राप्ति के लिए शास्त्रविहित यज्ञ अनुष्ठान करना चाहिए यह चिन्ता करते हुए उन्होंने समग्र राज्य भार मन्त्रियों को प्रदान कर दिया।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़कर आप सक्षम होंगे :

- दिलीप के प्रजा वात्सल्य को जान पाने में;
- उसके दूसरे व लोकोत्तर गुणों को समझ पाने में;
- दिलीप ने कैसे राज्यभार मन्त्रियों को प्रदान किया यह समझ पाने में;
- दिलीप की पत्नी के विषय में जान पाने में;
- प्रत्येक श्लोक का अन्वय कर पाने में और;
- समास आदि व्याकरण को समझ पाने में।

टिप्पणी

6.1 मूलपाठ –

प्रजानां विनयाधानाद्रक्षणाद्भरणादपि।
स पिता पितरस्तासां केवलं जन्महेतवः॥24॥

स्थित्यै दण्डयतो दण्ड्यान्परिणेतुः प्रसूतये।
अप्यर्थकामौ तस्यास्तां धर्म एव मनीषिणः॥25॥

दुदोह गां स यज्ञाय शस्याय मघवा दिवम्।
संपद्विनिमयेनोभौ दधतुर्भुवनद्वयम्॥26॥

न किलानुययुस्तस्य राजानो रक्षितुर्यशः।
व्यावृत्ता यत्परस्वेभ्यः श्रुतौ तस्करता स्थिता॥27॥

द्वेष्योऽपि सम्मतः शिष्टस्तस्यार्तस्य यथौषधम्।
त्याज्यो दुष्टः प्रियोऽप्यासीदङ्गुलीवोरगक्षता॥28॥

तं वेध विदधे नूनं महाभूतसमाधिना।
तथा हि सर्वे तस्यासन्परार्थैकफलला गुणाः॥29॥

स वेलावप्रवलयां परिखीकृतसागराम्।
अनन्यशासनामूर्वीं शशासैकपुरीमिव॥30॥

तस्य दाक्षिण्यरुढेन नाम्ना मगधवंशजा।
पत्नी सुदक्षिणेत्यासीदध्वरस्येव दक्षिणा॥31॥

कलत्रवन्तमात्मानमवरोधे महत्यपि।
तया मेने मनस्विन्या लक्ष्म्या च वसुधाधिपः॥32॥

तस्यामात्मानुरूपायामात्मजन्मसमुत्सुकः।
विलम्बितफलैः कालं स निनाय मनोरथैः॥33॥

सन्तानार्थाय विधये स्वभुजादवतारिता।
तेन धूर्जगतो गुर्वी सचिवेषु निचिक्षिपे॥34॥

6.2 मूलपाठ की व्याख्या

प्रजानां विनयाधानाद्रक्षणाद्भरणादपि।
स पिता पितरस्तासां केवलं जन्महेतवः॥24॥

अन्वय- प्रजानां विनयाधानात् रक्षणात् भरणात् अपि स पिता (आसीत्)। तासां पितरस्त केवलं जन्महेतवः।

टिप्पणी

अन्वयार्थ- प्रजानां जनानां विनयाधानात् शिक्षाकारणात् रक्षणात् पालनात् भरणात् अपि पोषणात् अपि सः दिलीपः पिता पितृस्थानीयः आसीत्। तासां पितरः तु जनकाः तु जन्महेतवः जननकारणानि केवलम् एव।

सरलार्थ- प्रजा को शिक्षा देना, उनकी रक्षा करना, उनका भरण करना आदि सभी दिलीप करते थे। अतः पिता के कार्यों के कारण वे प्रजा के पिता हुए। उनके प्राकृतिक पिता तो केवल जन्म के कारण थे।

तात्पर्यार्थ- जो पालन करता है वह पिता होता है। वह ही पुत्र को उपयुक्त शिक्षा प्रदान करके उसे सन्मार्ग पर प्रवृत करता है। पिता पुत्र का रक्षण, भरण व पोषण करता है। दिलीप के राज्य में लोगों के जन्म के प्रति उनके पिता के हेतु थे। पिता के कार्य तो दिलीप ही करते थे। वे प्रजा की शिक्षा व्यवस्था देखते थे। विपत्तिग्रस्त होने पर उनकी रक्षा करते थे। अन्नजलादि विषयों से उनको पालन करते थे। जो राजा होता है वह इसी प्रकार अपने राज्य को चलाता है। इस प्रकार दिलीप यथार्थ प्रजापालक राजा थे यह सुस्पष्ट होता है। दिलीप के राज्य में पिता जन्म के कारण मात्र थे। उनके प्रकृत जनक तो स्वयं राजा दिलीप ही थे।

व्याकरणविमर्श

विनयाधानात्- विनयस्य आधानं विनयाधानम् इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः, तस्मात् विनयाधानात्।

- जन्महेतवः- जन्मनः हेतवः जन्महेतवः इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः।

सन्धिकार्यम्

- विनयाधानाद्रक्षणाद्भरणादपि - विनयाधानात् + रक्षणात् + भरणात् + अपि
- पितरस्तासाम् - पितरः + तासाम्

प्रयोगपरिवर्तनम् - प्रजानां विनयाधानात् रक्षणात् भरणात् अपि तेन पित्रा अभूयत। तासां पितृभिः तु केवलं जन्महेतुभिः अभूयत।

पाठगतप्रश्न-6.1

1. दिलीप कैसे प्रजा के पिता थे?
2. लोगों के पिता कौन थे?
3. विनयाधानात् का विग्रह व समास लिखिए।
4. प्रजा के पिता कौन थे-

   (1) मृत्यु हेतवः, (2) वृद्धि हेतवः, (3) जन्महेतवः, (4) दोष हेतवः

टिप्पणी

6.3 मूलपाठ की व्याख्या

स्थित्यै दण्डयतो दण्डयान् परिणेतुः प्रसूतये।
अप्यर्थकामौ तस्यास्तां धर्म एवं मनीषिणः॥25॥

अन्वय- दण्डयान् स्थित्यै दण्डयतः प्रसूतये परिणेतुः मनीषिणः तस्य अर्थकामौ अपि धर्म एव आस्ताम्।

अन्वयार्थ- दण्डयान् दण्डनीयान् स्थित्यै लोकमर्यादायै दण्डयतः तेभ्यः दण्डं यच्छतः प्रसूतये सन्तानाय परिणेतुः विवाहं कुर्वतः तस्य दिलीपस्य अर्थकामौ एतन्नामकौ द्वौ पुरुषार्थौ अपि धर्म एव धर्मनामकपुरुषार्थ एव आस्ताम् अभवताम्।

सरलार्थ- दिलीप लोककल्याण के लिए दण्ड के योग्य को दण्ड देते थे। पुत्र की उत्पति के लिए विवाह किया। इस प्रकार उसके अर्थ और काम दो पुरूषार्थ धर्म स्वरूप हो गये।

तात्पर्यार्थ- महाराज दिलीप जगत के हित के लिए दण्ड योग्य को दण्ड देते थे। धनसंग्रह उनका उद्देश्य नहीं था। लोक में जन धन संग्रह के लिए दण्ड का प्रयोग करते हैं। किन्तु दिलीप उस दण्ड से लोकल्याण रूप धर्म को साधते थे। अतः उसका अर्थ साधन ही धर्म सिद्ध होता है। जगत में प्रायः जन काम के वशीभूत होते हैं। काम की शान्ति के लिए विवाह करते हैं किन्तु दिलीप ने भोग के लिए विवाह नहीं किया। अपितु सन्तान उत्पत्ति के लिए विवाह किया। इससे पितृ ऋण भी पूरा किया। अर्थात् यहाँ विवाह से पितृऋण की पूर्तिरूप धर्म ही सिद्ध होता है। अतः दिलीप का काम साधन भी धर्म को साधते थे। इस प्रकार दिलीप के अर्थ और काम भी धर्मपरता को प्राप्त थे। इस प्रकार उसका सभी कार्य धर्मपरक ही थे।

व्याकरण विमर्श-

- **दण्डयतः-** दण्ड्धतोः णिचि निष्पन्नात् दण्डिधतोः शतृप्रत्यये दण्डयत् इति प्रातिपदिकं भवति। तस्य षष्ठयेकवचनविवक्षायां दण्डयतः इति रूपम्।
- **दण्डयान्ः** - दण्डम् अर्हन्ति इति दण्डयाः, तान् दण्डयान्। द्वितीयाबहुवचनान्तम् इदं पदम्।
- **अर्थकामौः** - अर्थः च कामः च अर्थकामौ इति इतरेतरयोगद्वन्द्वसमासः।

सन्धिकार्यम्-

- **दण्डयतो दण्डयान्ः** - दण्डयतः + दण्डयान्
- **अप्यर्थकामौः** - अपि + अर्थकामौ
- **तस्यास्ताम्ः** - तस्याः + ताम्
- **धर्म एवः** - धर्मः एव

प्रयोगपरिवर्तनम्- दण्डयान् स्थित्यै दण्डयतः प्रसूतये परिणेतुः मनीषिणः तस्य अर्थकामाभ्यां अपि धर्मेण एव अभूयत।

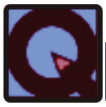

पाठगतप्रश्न-6.2

5. दिलीप दण्ड योग्य को कैसे दण्ड देते थे?

6. दिलीप का अर्थ काम कौन थे?

7. दण्डयतः शब्द को व्याकरण दृष्टि से स्पष्ट कीजिए।

8. दिलीप के अर्थ काम क्या थे?

   (1) धर्मः, (2) अर्थः, (3) कामः, (4) मोक्षः

6.4 मूलपाठ की व्याख्या

दुदोह गां स यज्ञाय शस्याय मघवा दिवम्।
सम्पद्विनिमयेनोभौ दधतुर्भुवनद्वयम्॥26॥

अन्वय- स यज्ञाय गां दुदोह, मघवा शस्याय दिवं दुदोह। (एवम्) उभौ सम्पद्विनिमयेन भुवनद्वयं दधतुः।

अन्वयार्थ- स राजा दिलीपः यज्ञाय यज्ञं कर्तुं गां पृथिवीं दुदोह दुग्धवान्। मघवा देवराजः इन्द्रः शस्याय धन्याय दिवं स्वर्गं दुदोह दुग्धवान्। उभौ दिलीपदेवेन्द्रौ सम्पद्विनिमयेन परस्परं सम्पत्त्याः विनिमयेन भुवनद्वयं लोकद्वयं दधतुः पोषितवन्तौ।

सरलार्थ- दिलीप ने यज्ञ से स्वर्ग स्थान देवों को प्रसाद देने के लिए प्रजा से कर स्वीकार किया और देवराज इन्द्र ने स्वर्ग लोक से पृथिवी लोक पर वर्षा की। इस प्रकार परस्पर सम्पत्तियों के विनिमय से दोनों ने दोनों लोकों का पोषण किया।

तात्पर्यार्थ- दिलीप के साथ देवराज इन्द्र की मित्रता थी। इसलिए दोनों के बीच सम्पतियों का विनिमय होता था। दिलीप देवताओं के प्रसाद के लिए यज्ञादि करते थे। उसके लिए प्रजा से कर लेते थे। कर रूप में जो धन संग्रह होता था उससे ही यज्ञ करते थे। अतः दिलीप यज्ञ के लिए पृथ्वी को दोहते थे। उस यज्ञ से सन्तुष्ट होकर इन्द्र पृथ्वी पर वर्षा करते थे। उससे पृथिवी पर धान्य होता था। उस धान्य से जन धनार्जन करके कर देते थे। इस प्रकार दिलीप यज्ञादि से स्वर्ग का पोषण करता था। देवराज इन्द्र वर्षा से पृथिवी का पोषण करते थे। इस प्रकार दोनों परस्पर परिपोषक होकर पृथ्वी एवं स्वर्ग का पालन करते थे।

व्याकरणविमर्श -

- **दुदोहः** - दुह्-धातोः लिट्लकारे प्रथमपुरुषैकवचने दुदोह इति रूपम्। दुग्धवान् इत्यर्थः।
- **सम्पद्विनिमयेनः** - सम्पदः विनिमयः सम्पद्विनिमयः इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः, तेन सम्पद्विनिमयेन।

टिप्पणी

- **दधतुः** - धा-धातोः लिट्लकारे प्रथमपुरुषद्विवचने दधतुः इति रुपम्। पोषितवन्तौ इत्यर्थः।
- **भुवनद्वयम्:** - भुवनयोः द्वयं भुवनद्वयम् इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः।

सन्धिकार्यम्-

- **सम्पद्विनिमयेनोभौ** - सम्पद्विनिमयेन + उभौ
- **दधतुर्भुवनद्वयम्** - दधतुः + भुवनद्वयम्
- **प्रयोगपरिवर्तनम्** - तेन यज्ञाय गौः मघोना सस्याय द्यौ दुदुहे। (एवम्) उभाभ्यां सम्पद्विनिमयेन भुवनद्वयं दधे।

पाठगत प्रश्न 6.3

9. दिलीप कैसे पृथिवी को दोहते थे?
10. दो भुवनों के क्या नाम है?
11. दुदोह का व्याकरण स्पष्ट करो?
12. दिलीप किस के साथ सम्पद्विनिमय करते थे?

    (1) बलि के साथ, (2) वरुण के साथ, (3) सूर्य के साथ, (4) इन्द्र के साथ।

6.5 मूलपाठ की व्याख्या

न किलानुययुस्तस्य राजानो रक्षितुर्यशः।
व्यावृत्ता यत्परस्वेभ्यः श्रुतौ तस्करता स्थिता ॥27॥

अन्वयः- राजानः रक्षितुः तस्य यशो न अनुययुः किल। यत् तस्करता परस्वेभ्यो व्यावृत्ता (सती) श्रुतौ स्थिता।

अन्वयार्थः - राजानः अन्ये नृपोः रक्षितुः रक्षकस्य तस्य दिलीपस्य यशः कीर्तिः न अनुययुः न अनुकृतवन्तः किल खलु। यत् यतः तस्करता चौर्य परस्वेभ्यः अन्यद्रव्येभ्यः व्यावृत्ता निवृत्ता सती श्रुतौ शब्दे स्थिता आसीत्।

सरलार्थ- दिलीप के राज्य में कोई भी तस्कर नहीं था। तस्करता केवल शब्द रूप में ही सुनी जाती थी। वास्तविक रुप से वहाँ तस्कर नहीं थे। अतः अन्य राजा दिलीप के यश का अनुकरण नहीं कर पाते थे।

तात्पर्यार्थ- जगत में अन्य राजाओं में दिलीप सा विलक्षण नहीं था। उसके शासन काल में लोगों की मानसिक प्रवृति ही परिवर्तित हो गई। इस कारण दिलीप के राज्य में कोई व्यक्ति चोर नहीं था। न केवल चोर अपितु समाज में तस्कर भी नहीं थे। पूर्वकाल में दूसरों के धन

टिप्पणी

में तस्कर थे इस समय नहीं हैं। लोग तस्कर शब्द को तो सुनते थे किन्तु वह कैसा होता है यह अनुभव नहीं किया। शशश्रृंग (खरगोश के सींग) के समान वह असत्य था। अतः तस्करता शब्द मात्र दिलीप के राज्य में थे ऐसा कवि कहते है। इसलिए समीपवर्ती अन्य राजा इनसे इर्ष्या करते थे। वे उसके यश के अनुकरण की चेष्टा करते थे किन्तु दिलीप के समान कीर्ति का अनुकरण करने में समर्थ नहीं थे।

व्याकरणविमर्श -

अनुययुः- अनु-पूर्वकात् याधतोः लिटि प्रथमपुरुषबहुवचनविवक्षायां अनुययुः इति रुपम्। अनुकृतवन्तः इत्यर्थः।

व्यावृत्ता- विपूर्वकात् आङ्-पूर्वकात् वृत्-धातोः क्तप्रत्यये व्यावृत्त इति रूपम्। ततः स्त्रियां टाप्प्रत्यये व्यावृत्ता इति रूपम्।

परस्वेभ्यः- परेषां स्वानि परस्वानि इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः, तेभ्यः परस्वेभ्यः।

तस्करता- तस्करस्य भावः तस्करता। अत्र तस्करशब्दात् तल्प्रत्ययः कृतः।

सन्धिकार्यम् -

- **किलानुययुस्तस्यः** - किल + अनुययुः + तस्य
- **राजानो रक्षितुर्यशः** - राजानः + रक्षितुः + यशः

प्रयोगपरिवर्तनम् - राजभिः रक्षितुः तस्य यशः न अनुयये किल। यत् तस्करतया परस्वेभ्यः व्यावृत्तया (सत्या) श्रुतौ स्थितम्।

पाठगत प्रश्न-6.4

13. दिलीप के राज्य में तस्करता कहाँ थी?
14. अनुययुः की व्याकरण स्पष्ट कीजिए।
15. ''किलानुययुस्तस्य'' इसका सन्धिविच्छेद कीजिए।

6.6 मूलपाठ की व्याख्या

द्वेष्योपि सम्मतः शिष्टस्तरस्यार्तस्य यथौषधम्।
त्याज्यो दुष्टः प्रियोप्यासीदङ्गुलीवोरगक्षता॥ 28॥

अन्वय- शिष्टः द्वेष्यः अपि आर्त्तस्य औषधं यथा तस्य सम्मतः (आसीत्)। दुष्टः प्रियः अपि उरगक्षता अङ्गुली इव तस्य त्याज्यः आसीत्।

अन्वयार्थ- शिष्टः सज्जनः द्वेष्यः अपि शत्रुः अपि आर्त्तस्य रोगिणः औषधं यथा भेषजम् इव तस्य दिलीपस्य सम्मतः अनुमतः आसीत्। दुष्टः दुर्जनः प्रियः अपि आत्मीयः अपि उरगक्षता सर्पेण दष्टा अङ्गुली इव अङ्गलीवत् तस्य दिलीपस्य त्याज्यः त्यागयोग्यः आसीत् अभवत्।

सरलार्थ- सत् चरित्रशील व्यक्ति शत्रु भी है तो दिलीप द्वारा ग्रहणीय था। जैसे रोग द्वारा औषधि ग्रहणीय होती है। दुर्जन आत्मीय भी दिलीप द्वारा त्याज्य था जैसे सर्प द्वारा दंशित अंगुली त्याज्य होती है।

तात्पर्यार्थ- जगत में स्थित सभी लोगों में से कुछ शत्रु तो कुछ मित्र होते हैं। लोग बिना कारण ही शत्रुओं के साथ कलह करते हैं। किन्तु दिलीप का स्वभाव ऐसा नहीं था। औषधि सदैव रुचि रहित होती है फिर भी ऐसी औषधि रोगी द्वारा ग्रहण की जाती है। अन्यथा रोग शान्त नहीं होता। इसी प्रकार शत्रु भी सत्कार्य में आचरण करता है तो वह दिलीप द्वारा आदरणीय था। शत्रुता के आधार पर दिलीप उसे नहीं त्यागते थे। सर्प के द्वारा दंशित अंगुली प्रिय होती है। फिर भी वह त्याज्य है। अन्यथा व्यक्ति का मरना संभव है। इसी प्रकार आत्मीय जन दुष्ट आचारण करता था तो दिलीप उसके साथ सम्बन्ध नष्ट कर देते थे। इस प्रकार सच्चरित्रशाली ही दिलीप का मित्र होता था। दुष्टचरित्रशाली दिलीप का शत्रु होता था। कारणान्तर से हुए शत्रु और कारणान्तर से हुए मित्र का कोई स्थान नहीं था।

व्याकरण विमर्श :-

- **द्वेष्यः** -द्वेष्टु योग्यः इत्यर्थे द्विष्-धतोः ण्यत्प्रत्यये द्वेष्यः इति रूपम्। द्वेषयोग्यः इत्यर्थः।
- **सम्मतः** - सम्पूर्वकात् मन्-धातोः क्तप्रत्यये सम्मतः इति रूपम्।
- **त्याज्यः** - त्यक्तुं योग्यः इत्यर्थे त्यज्-धातोः ण्यत्प्रत्यये त्याज्यः इति रूपम्।
- **उरगक्षताः** - उरगेण क्षता उरगक्षता इति तृतीयातत्पुरुषसमासः। उरगः नाम सर्पः।

संधिकार्यम् -

- **द्वेष्योपि** - द्वेष्यः + अपि
- **शिष्टस्तस्यार्त्तस्यः** - शिष्टः + तस्य + आर्त्तस्य
- **यथौषधम्ः** - यथा + औषधम्
- **त्याज्यो दुष्टः** - त्याज्यः + दुष्टः
- **प्रियोप्यासीदङ्गुलीवोरगक्षताः** - प्रियः + अपि + आसीत् + अङ्गुली + इव + उरगक्षता।
- **प्रयोगपरिवर्तनम्** - शिष्टेन द्वेष्येण अपि आर्त्तस्य औषधेन यथा तस्य सम्मतेन अभूयत। दुष्टेन प्रियेण अपि उरगक्षतया अङ्गुल्या इव तस्य त्याज्येन अभूयत।

अलंकारालोचना- इस श्लोक में शिष्ट शत्रु औषध से उपमित है। दुष्ट प्रिय सर्पदंशित अंगुली से उपमित है। शिष्ट शत्रु, दुष्ट प्रिय उपमेय है। औषध, सर्पदंशित अंगुली उपमान है। इव उपमावाचक शब्द है। ग्राह्य एवं त्याज्य सादृश्य सम्बन्ध है। अतः यहाँ उपमा अलंकार है।

पाठगतप्रश्न-6.5

16. दिलीप का शत्रु भी शिष्ट हो तो कैसा था?

17. यदि दिलीप का आत्मीय दुष्ट भी तो कैसा था?

18. 'प्रियोप्यासीदगुंलीवोरगक्षता' संधि विच्छेद कीजिए।

19. उरग किसका नाम है–

(1) पक्षी, (2) सर्प:, (3) मार्जार:, (4) इन्दुर:

6.7 मूलपाठ की व्याख्या

तं वेधा विदधे नूनं महाभूतसमाधिना।
तथा हि सर्वे तस्यासन् परार्थैकफला गुणा:॥ 29॥

अन्वय– वेधा: तं महाभूतसमाधिना विदधे नूनम्। तथा हि तस्य सर्वे गुणा: परार्थैकफला आसन्।

अन्वयार्थ– वेध ब्रह्मा तं दिलीपं महाभूतसमाधिना पृथिव्यादिभि: महाभूतकारणसामग्रीभि: विदधे सृष्टवान् नूनम अवश्यम्। तथा हि तस्य दिलीपस्य सर्वे सकला: गुणा: परार्थैकफला: अन्यस्य प्रयोजनं साधयन्त: आसन् अभवन्।

सरलार्थ– ब्रह्मा ने पंच महाभूत नामक उपकरणों से सृष्टि की रचना की थी। उन्हीं उपकरणों से दिलीप की सृष्टि की। अत: जैसे पंच महाभूत दूसरों के लिए होते है। उसी प्रकार दिलीप के सभी गुण परार्थ (दूसरों के लिए) ही थे।

तात्पयार्थ– इस श्लोक में कवि दिलीप के परोपकारिता का वर्णन करते हैं। पृथिवी, जल, तेज, वायु और आकाश ये पंच महाभूत हैं। इन्ही से विधाता ने जगत की रचना की है। इन पंचमहाभूतों के यथाक्रम गन्ध, रस, रूप, स्पर्श और शब्द ये पांच गुण है। गन्ध स्वयं गन्ध को स्वीकार नहीं करती। किन्तु गन्ध से अन्य आनन्दित होते हैं। रस स्वयं रस को ग्रहण नहीं करता किन्तु अन्य रस से मुदित होते हैं। इसी प्रकार ये सभी गुण अन्य के प्रयोजनों को सिद्ध करते हैं। भगवान ने पंचमहाभूतों की इन सामग्रियों से ही दिलीप की रचना की थी। अत: जैसे महाभूतों के कारण गन्धदि परार्थ को सिद्ध करते हैं। उसी प्रकार दिलीप का प्रत्येक कार्य परार्थ ही था। उनका सम्पूर्ण जीवन परप्रयोजन के लिए ही नियुक्त था। इससे वह वास्तविक परोपकारी हुए। इसलिए कवि उसके सभी गुण परार्थेकफल का वर्णन करते हैं।

व्याकरण विमर्श

- **विदधे:** – विपूर्वकात् धाधातो: लिटिप्रथमपुरुषैकवचने विदधे इति रूपम्। विहितवान् इत्यर्थ:।

- **महाभूतसमाधिना:** - महान्ति च तानि भूतानि महाभूतानि इति कर्मधरयसमास:। महाभूतानां समाधि: महाभूतसमाधि इति षष्ठीतत्पुरुषसमास:, तेन महाभूतसमाधिना। इदं तृतीयैकवचनान्तं रूपम्।
- **पराथैकफला:**- परस्य अर्थ: परार्थ: इति षष्ठीतत्पुरुषसमास:। परार्थ एव एकं फलं येषां ते परार्थैकफला: इति बहुव्रीहिसमास:।

संधिकार्यम् -

- तस्यासन्- तस्य + आसन्
- परार्थैकफला गुणा :- परार्थैकफला: + गुणा:

प्रयोगपरिवर्तनम्- वेधसा स महाभूतसमाधिना विदधे नूनम्। तथा हि तस्य सर्वै: गुणै: परार्थैकफलै: अभूयत।

पाठगत प्रश्न-6.6

20. दिलीप के सभी गुण कैसे परार्थकफल हैं?

21. 'विदधे' में धातु और लकार बताइए।

22. महाभूतसमाधिना का विग्रह एवं समास का नाम लिखिए।

6.8 मूलपाठ की व्याख्या

स वेलावप्रवलयां परिखीकृतसागराम्।
अनन्यशासनामुर्वी शशासैकपुरीमिव ॥ 30॥

अन्वय:- स वेलावप्रवलयां परिखीकृतसागरामृ अनन्यशासनाम् उर्वीम् एकपुरीम् इव शशास।

अन्वयार्थ:- स राजा दिलीप: वेलावप्रवलयां समुद्रतटरूपेण प्राकारेण वेष्टितां परिखीकृतसागराम् खेयीकृत: सागर: यया ताम् अनन्यशासनाम् अपरनृपशासनरहिताम् उर्वीं पृथिवीम् एकपुरीम् इव एकनगरीम् इव शशास शासितवान्।

सरलार्थ:- समुद्र तट दिलीप के राज्य के परकोटे के तुल्य था। समुद्र ही उसके राज्य की खाई थी। पृथ्वी पर अन्य किसी का शासन नहीं था। इस प्रकार समग्र पृथ्वी पर दिलीप ही एक नगरी के समान शासन करता था।

तात्पर्यार्थ:- प्रत्येक राज्य के राजा राज्य की रक्षा के लिए कुछ उपाय करते हैं जैसे राज्य की सीमा के अन्त में परकोटे का निर्माण करते हैं। परकोटे के बाहर खाई खोदते हैं। किन्तु दिलीप ने अपने राज्य की रक्षा के लिए परकोटे का निर्माण नहीं करवाया। सागर का तट स्वत: ही

टिप्पणी

राज्य का परकोटा हो गया। इस प्रकार उन्होंने खाई भी नहीं खुदवाई। समुद्र ही उनके विशाल राज्य की खाई स्वरुप था। इससे ज्ञात होता है कि दिलीप का राज्य समुद्र पर्यन्त था। अर्थात् सम्पूर्ण ही पृथ्वी उनके राज्य में अन्तर्भव थी। अत: दिलीप के अलावा किसी राजा का शासन पृथ्वी पर नहीं था जैसे एक राजा एक नगर पर शासन करता है उसी प्रकार दिलीप सम्पूर्ण पृथ्वी पर एक नगरी के समान शासन करते थे।

व्याकरण विमर्श -

- **वेलावप्रवलयाम्:**- वप्राणां वलया: वप्रवलया: इति षष्ठीतत्पुरुषसमास:। वेला एव वप्रवलया: यस्या: सा वेलावप्रवलया इति बहुव्रीहिसमास:, तां वेलावप्रवलयाम्।
- **परिखीकृतसागराम्** - अपरिखा: परिखा: यथा सम्पद्यन्ते तथा कृता: इति विग्रहे च्विप्रत्यये परिखीकृता: इति रुपम्। परिखीकृता: सागरा: यस्या: सा परिखीकृतसागरा: इति बहुव्रीहिसमास: तां परिखीकृतसागरम्।
- **अनन्यशासनाम्:** - अन्यस्य शासनम् अन्यशासनम् इति षष्ठीतत्पुरुषसमास:। अविद्यमानम् अन्यशासनं यस्या सा अनन्यशासना इति नञ्बहुव्रीहिसमास:, ताम् अनन्यशासनाम्।
- **शशास** - शास्-धतो: लिटि प्रथमपुरुषैकवचने शशास इति रूपम्।
- **एकपुरीम्** - एका च असौ पुरी च एकपुरी इति कर्मधारयसमास:, ताम् एकपुरीम्।

संधिकार्यम् -

- **अनन्यशासनामुर्वीम्** - अनन्यशासनाम् + उर्वीम्
- **शशासैकपुरीमिव** - शशास + एकपुरीम् + इव
- **प्रयोगपरिवर्तनम्** - तेन वेलावप्रवलया परिखीकृतसागरा अनन्यशासना उर्वी एकपुरी इव शशासे।

अलंकारालोचना- इस श्लोक में दिलीप के राज्य को अर्थात समग्र पृथ्वी एक पुरी से उपमित दिलीप का राज्य उपमेय है, एकपुरी उपमान है, इव उपमावाचक शब्द है। जैसे राजा एक नगर पर शासन करता है उसी प्रकार दिलीप सम्पूर्ण पृथिवी पर शासन करते थे। अत: यहाँ उपमा अलंकार है।

पाठगतप्रश्न-6.7

23. दिलीप पृथ्वी को किसके समान शासन करते थे?
24. इस श्लोक में उपमा अलंकार सिद्ध कीजिए।
25. 'परिखीकृत सागराम्'' को रूप सिद्ध कीजिए।

टिप्पणी

6.9 मूलपाठ की व्याख्या

तस्य दाक्षिण्यरूढेन नाम्ना मगधवंशजा।
पत्नी सुदक्षिणेत्यासीदध्वरस्येव दक्षिणा॥ 31॥

अन्वयः- तस्य मगधवंशजा दाक्षिण्यरूढेन नाम्ना अध्वरस्य दक्षिणा इव सुदक्षिणा इति पत्नी आसीत्।

अन्वयार्थ- तस्य राज्ञः दिलीपस्य मगधवंशजा मगधकुले उत्पन्नाः दाक्षिण्यरूढेन औदार्यप्रसिद्धेन नाम्ना अभिधनेन अध्वरस्य यज्ञस्य दक्षिणा दक्षिणानामधेया इव सुदक्षिणा इति सुदक्षिणा इति नाम्ना प्रसिद्धा पत्नी भार्या आसीत्।

सरलार्थः- दिलीप की पत्नी सुदक्षिणा मगध वंश में उत्पन्न थी। वह उदारता के कारण यज्ञ की पत्नी दक्षिणा जैसे सुलक्षणा है वैसी ही थी।

तात्पर्यार्थः- इस श्लोक में कालिदास दिलीप की पत्नी सुदक्षिणा का वर्णन करते हैं। अध्वर की अर्थात् यज्ञ की पत्नी का नाम दक्षिणा होता है। यज्ञ के अन्त में दक्षिणा दी जाती है। लोग उसको भी यज्ञ के अंग के रूप में कल्पना करते हैं। उसी से ही यज्ञ पूर्ण होता है ऐसा प्रसिद्ध है। यज्ञ का सम्पूर्णत्व दक्षिणा से सिद्ध होता है। मगध वंश में उत्पन्न सुदक्षिणा दिलीप की पत्नी थी। वह दाक्षिण्य के कारण अत्यधिक प्रसिद्ध थी। जैसे दक्षिणा यज्ञ की पूर्णता को सिद्ध करती है उसी प्रकार सुदक्षिणा भी रघुकुल की सम्पूर्णता को सिद्ध करती थी। अतः दिलीप ने सुदक्षिणा से ही पुत्र लाभ प्राप्त किया। उस पुत्र से रघुवंश की सम्पूर्णता प्राप्त हुई। अतः सुदक्षिणा यज्ञ की सहधर्मिणी का सुदक्षिणा के साथ उपमिति है।

व्याकरण विमर्श -

- **दाक्षिण्यरूढेन**- दक्षिणस्य भावः कर्म वा दाक्षिण्यं भवति। रुह्-धतोः क्तप्रत्यये रूढम् इति रूपं सिध्यति। दाक्षिण्येन रूढम् इति तृतीयातत्पुरुषसमासः।
- **मगधवंशजा**- मगधस्य वंशः मगधवंशः इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः। मगधवंशे जाता इति अर्थे जन्धातोः डप्रत्यये मगधवंशज इति शब्दः निष्पद्यते। तस्मात् स्त्रीलिङ्ग टापि मगध वंशजा इति रूपम्।
- **अध्वरस्य**- अविद्यमानः ध्वरः यस्मिन् सः अध्वरः इति नञ्बहुव्रीहिसमासः, तस्य अध्वरस्य। यज्ञस्य इत्यर्थः।

संधिकार्यम्-

- **सुदक्षिणेत्यासीदध्वरस्येवः**- सुदक्षिणा+इति+आसीत्+अध्वरस्य+इव
- **प्रयोगपरिवर्तनम्**- तस्य मगधवंशजया दाक्षिण्यरूढेन नाम्ना अध्वरस्य दक्षिणया इव सुदक्षिणया इति पत्न्या अभूयत।

टिप्पणी

अलंकारालोचना- इस श्लोक में 'तस्य' सर्वनामवाचक पद दिलीप का बोध कराता है। दिलीप अध्वरेणया। यज्ञेन से उपमित है। सुदक्षिणा यज्ञ की पत्नी दक्षिणा से उपमित है। 'इव' उपमा वाचक शब्द है अत: यहाँ उपमा अलंकार है।

पाठगतप्रश्न-6.8

26. दिलीप की पत्नी किस वंश में उत्पन्न हुई?

27. सुदक्षिणा किसके साथ उपमित है?

28. अध्वरस्य का विग्रह व अर्थ लिखिए।

29. सुदक्षिणा किस देश में उत्पन्न हुई?

    (1) मालवा, (2) मगध, (3) अयोध्या, (4) नन्दीग्राम

6.10 मूलपाठ की व्याख्या

कलत्रवन्तमात्मानमवरोधे महत्यपि।
तया मेने मनस्विन्या लक्ष्म्या च वसुधाधिप:॥32॥

अन्वय:-वसुधाधिप: अवरोधे महति अपि मनस्विन्या तया लक्ष्म्या च आत्मानं कलत्रवन्तं मेने।

अन्वयार्थ:- वसुधाधिप: पृथिव्या: ईश्वर: दिलीप: अवरोधे अन्त: पुरवर्गे महपि अपि अधिके अपि मनस्विन्या दृढ़चित्तया तया सुदक्षिणया लक्ष्म्या च राजश्रिया च आत्मानं स्वं कलत्रवन्तं सभार्यं मेने ज्ञातवान्।

सरलार्थ:- दिलीप का अन्त:पुर वर्ग भी महान् था। फिर भी दिलीप अपनी पत्नी सुदक्षिणा व राजलक्ष्मी से अपने आप को भार्यावान् प्रकट करते थे।

तात्पर्यार्थ:- प्राचीनकाल में प्राय राजाओं का अन्त:पुर वर्ग विशाल होता था। उस अन्त: पुर वर्ग में बहुत सी नारियाँ भी होती थी। उन नारियों में कुछ पत्नी (भार्या) होती थी और कुछ दासी भी होती थी। अर्थात् दासी भी राजा के भोगवस्तु तुल्य होती थी। दिलीप सम्पूर्ण जगत का स्वामी था। अत: वह अपने अन्त:पुर में बहुत सी नारी स्थापित करने में समर्थ था। किन्तु धर्म भार्या को छोड़कर अन्य नारी के साथ संगम धर्म सम्मत नहीं था। अत: दिलीप सुदक्षिणा ही मेरी पत्नी है ऐसा चिन्तन करते थे। इस प्रकार राजलक्ष्मी, सुदक्षिणा से ही राजा दिलीप पत्नीवान् थे। इससे राजा का भोगपरागमुखत्व भाव प्रकट होता है।

व्याकरणविमर्श:-

- **कलत्रवन्तम** - कलत्रम् अस्ति यस्य स कलत्रवान्, तं कलत्रवन्तम्। इदं द्वितीयैकवचनान्तं रूपम्।

- **मेने** - मन्-धातोः लिटि प्रथमपुरूषैकवचने मेने इति रूपं भवति।
- **मनस्विन्या** - प्रशस्तं मनः अस्ति यस्याः सा मनस्विनी, तया मनस्विन्या।
- **वसुधाधिप**- अधिपाति इति अधिपः भवति। वसुधयाः अधिपः वसुधधिपः इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः।

संधिकार्यम् -

- **कलत्रवन्तमात्मानमवरोधे** - कलत्रवन्तम्+आत्मानम्-अवरोधे
- **महत्यपित** - महति + अपि

प्रयोगपरिवर्तनम् - वसुधाधिपेन अवरोधे महति अपि मनस्विन्या तया लक्ष्म्या च आत्मा कलत्रवान् मेने।

पाठगत प्रश्न 6.9

30. दिलीप किससे कलत्रवान थे?

31. इस श्लोक से दिलीप के कौन से गुण सूचित होते हैं?

32. 'कलत्रवन्तमात्मामवरोधे'' का सन्धि विच्छेद कीजिए।

6.11 मूलपाठ की व्याख्या

तस्यामात्मानुरूपायामात्मजन्मसमुत्सुकः।
विलम्बितफलैः कालं स निनाय मनोरथैः॥ 33॥

अन्वयः- स आत्मानुरूपायां तस्याम् आत्मजन्मसमुत्सुकः विलम्बितफलैः मनोरथैः कालं निनाय।

अन्वयार्थः- स राजा दिलीपः आत्मानुरूपायां आत्मसदृश्यां तस्यां सुदक्षिणायाम् आत्मजन्मसमुत्सुकः पुत्रप्राप्तये उत्कण्ठितः विलम्बितफलैः सविलम्बपरिणामैः मनोरथैः अभिलाषैः। कालं समयं निनाय यापयामास।

सरलार्थः- दिलीप ने अपने सादृश्य सुदक्षिणा में पुत्रलाभ हो, यह इच्छा की। किन्तु बहुत काल व्यतीत होने पर भी पुत्र लाभ न हुआ। इस विलम्ब के कारण वह दुःखित हुए थे।

तात्पर्यार्थः- सुदक्षिणा दिलीप के समान क्षत्रिय कुल में उत्पन्न हुई थी। दिलीप के समान उसके बहुत गुण थे। यदि सुदक्षिणा के गर्भ में पुत्रोत्पति होती है तो वह पुत्र रघुवंशीय होगा। उस पुत्र में राजोचित गुण अवश्य होंगे। इसलिए सुदक्षिणा में पुत्र जन्म हो यह दिलीप की इच्छा थी। किन्तु विवाह के बहुत से वर्ष व्यतीत हो गए। फिर भी दिलीप को पुत्र लाभ नहीं हुआ। पुत्र नहीं होता तो पितृऋण पूर्ण नहीं होता। उससे पाप की संभावना होगी। अतः दिलीप अत्यधिक चिन्ताकुल थे। इस प्रकार पुत्र के अभाव से दिलीप ने दुःखाक्रान्त होकर काल व्यतीत किया।

व्याकरणविमर्शः-

- **आत्मनुरूपायाम्** - आत्मनः अनुरूपा आत्मानुरूपा इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः, तस्याम् आत्मानुरूपायाम्।
- **आत्मजन्मसमुत्सुक** - आत्मनो जन्म यस्य स आत्मजन्मा इति व्याधिकरणबहुव्रीहिसमासः। अथवा आत्मनः जन्म आत्मजन्मा इत षष्ठीतत्पुरुषसमासः। आत्मजन्मनि समुत्सुकः आत्मजन्मसमुत्सुकः इति सप्तमीतत्पुरुषसमासः।
- **विलम्बितफलै** - विलम्बः सञ्जातः अस्य इत्यर्थे विलम्बितम् इति भवति। विलम्बितं फलं येषां ते विलम्बितफलाः इति बहुव्रीहिसमासः, तैः विलम्बितफलैः।
- **निनाय** - प्रापणार्थकस्य नीधतोः लिटि प्रथमपुरुषैकवचने निनाय इति रूपम्।

सन्धिकार्यम् -

- **तस्यामात्मानुरूपायामात्मजन्मसमुत्सुकः**-तस्याम्+आत्मानुरूपायाम्+ आत्मजन्मसमुत्सुकः
- **प्रयोगपरिवर्तनम्**:- तेन आत्मानुरूपायां तस्याम् आत्मजन्मसमुत्सुकेन विलम्बितफलैः मनोरथैः कालः निन्ये।

पाठगतप्रश्न-6.10

33. दिलीप कैसे काल व्यतीत करते थे?
34. दिलीप किस में आत्मजन्मसमुत्सुक थे?
35. आत्मजन्मसमुत्सुकः का विग्रह एवं समास लिखिए।

6.12 मूलपाठ की व्याख्या

सन्तानार्थाय विधये स्वभुजादवतारिता।
तेन धूर्जगतो गुर्वी सचिवेषु निचिक्षिपे॥ 34॥

अन्वयः- तेन सन्तानार्थाय विधये स्वभुजात् अवतारिता जगतो गुर्वी धूः सचिवेषु निचिक्षिपे।

अन्वयार्थः- तेन दिलीपेन सन्तानार्थाय सन्तानप्रयोजनाय विधये अनुष्ठानाय स्वभुजाद् निजहस्तात् अवतारिता अर्पिता जगतः लोकस्य गुर्वी दुर्वहा धूः भारः सचिवेषु मन्त्रिषु निचिक्षिपे निक्षिप्ता।

सरलार्थः- पुत्र प्राप्ति के लिए दिलीप ने शास्त्रविहित अनुष्ठान आदि करने की इच्छा की। अतः उसने समग्र जगत का भार मन्त्रियों को समर्पित कर दिया।

तात्पर्यार्थः- विवाह के बाद बहुत वर्ष व्यतीत हो गये थे। राजा दिलीप सन्तान रहित था। इसलिए दैव का ही आश्रय करना चाहिए, ऐसा सोचकर शास्त्रविहित अनुष्ठान आदि को करने

की इच्छा की। किन्तु अनुष्ठान किया जाता है तो राज्य का संचालन नहीं होगा। क्योंकि अनुष्ठान आदि करने के लिए बहुत काल की अपेक्षा होती है। अतः दिलीप ने सम्पूर्ण जगत का भार मन्त्रियों को समर्पित कर दिया। क्योंकि सम्पूर्ण जगत दिलीप के शासनाधीन था। यद्यपि प्रजा का पालन ही राजा का मुख्य कर्तव्य होता है। फिर भी दिलीप ने सन्तान लाभ के लिए उस कर्तव्य का परित्याग किया। क्योंकि सन्तान से ही पितृ ऋण की पूर्ति संभव है। इस प्रकार राज्य परिचालन का परित्याग करके पुत्रलाभ के आकांक्षी दिलीप धर्माचरण करने के लिए उद्यत थे।

व्याकरण विमर्श -

- **सन्तानार्थायः**- सन्तानः अर्थः यस्य स सन्तानार्थः इति बहुव्रीहिसमासः, तस्मै सन्तानार्थाय। अथवा सन्तानाय अयम् सन्तानार्थः इति चतुर्थीतत्पुरुषसमासः, तस्मै सन्तानार्थाय।
- **विधये**:- विधीयते इति विधिः भवति। अनुष्ठानम् इत्यर्थः।
- **स्वभुजाद्**:- स्वस्य भुजः स्वभुजः इति षष्ठीतत्पुरुषसमासः, तस्मात् स्वभुजात्।
- **अवतारिता**: - अवपूर्वकात् तृधातोः णिचि क्तप्रत्यये स्त्रियां टापि च अवतारिता इति रूपम्।
- **गुर्वीः** - गुरुशब्दस्य स्त्रियों ङीपि गुर्वी इति रूपम्।
- **निचिक्षिपे**: - निपूर्वकस्य क्षिप् धतोः लिटि कर्मणि प्रथमपुरुषैकवचने निचिक्षिपे इति रूपम्। निक्षिप्तवान् इति अर्थः।

संधिकार्यम् -

- स्वभुजादवतारिता- स्वभुजात् + अवतारिता
- धूर्जगतो गुर्वी - धूः+जगतः+गुर्वी
- प्रयोगपरिवर्तनम्- स सन्तानार्थाय विधये स्वभुजात् अवतारितां जगतः गुर्वीं धं सचिवेषु निचिक्षेप।

पाठगतप्रश्न-6.11

36. जगत का धूः (भार) कैसा था?

37. 'सन्तानार्थाय' इस शब्द का क्या अर्थ है?

38. निचिक्षेपे का धातु तथा लकार लिखिए।

पाठसार

महाराज दिलीप प्रजावत्सल थे। क्योंकि प्रजा की शिक्षा व्यवस्था, रक्षण, पोषण इत्यादि सब

टिप्पणी

देखते थे। पिता के कार्यों को करने के कारण दिलीप ही प्रजा के पिता थे। उनके प्रकृत पिता तो जन्म के कारण थे। लोकहित के लिए दण्डनीय लोगों को दण्ड देते थे न कि धन संग्रह के लिए। इसी प्रकार सन्तान लाभ के लिए विवाह किया था न कि भोग के लिए। उनके अर्थकाम के साधन धर्म को ही सिद्ध करते थे। देवराज इन्द्र के साथ उनकी मित्रता थी। दिलीप पृथ्वी से कर संग्रह करके यज्ञादि का सम्पादन करते थे। अन्य राजा महायशस्वी दिलीप की कीर्ति का अनुकरण भी नहीं कर पाते थे। क्योंकि दिलीप के राज्य में तस्करता शब्द सुनने में ही आता था। उसके शत्रु भी सच्चरित्रशाली होने पर ग्राह्य थे जैसे रोगी द्वारा रुचि रहित भी औषधि ग्राह्य होती है। आत्मीय जन भी दुष्ट हो तो उनके द्वारा त्याज्य थे जैसे सर्पदंशित अंगुली अभीष्ट होने पर भी त्याज्य होती है। ब्रह्मा ने उसको महाभूत कारण सामग्री से बनाया था। अत: उसके सभी गुण परार्थकफल थे। समग्र पृथ्वी ही उसके शासनाधीन थी। अतएव उसके राज्य की खाई समुद्र था। समुद्र तट उसके राज्य का परकोटा था। इस प्रकार सम्पूर्ण पृथ्वी एक नगरी के समान शासित थी। उसकी पत्नी मगधकुल में उत्पन्न सुलक्षणा सुदक्षिणा थी। वह यज्ञ की पत्नी दक्षिणा के समान उदारता के कारण प्रसिद्ध थी। वह सम्पूर्ण पृथ्वी का स्वामी था। फिर भी वह धर्मभार्या सुदक्षिणा, राजलक्ष्मी से अपने को कलत्रवान् मानता था। उस निजसदृश सुदक्षिणा से पुत्र जन्म हो, यह दिलीप की इच्छा थी। क्योंकि सुदक्षिणा भी क्षत्रियकुलोत्पन्न थी। अत: उस से उत्पन्न पुत्र अवश्य राजगुणोचित होगा ऐसा दिलीप सोचते थे। किन्तु विवाह के बाद बहुत वर्ष व्यतीत हो गये। फिर भी उनको सन्तान लाभ नहीं हुआ। अत: दिलीप दु:ख से आक्रान्त थे। इस कारण सन्तान लाभ के लिए शास्त्रनिर्दिष्ट अनुष्ठान करने के लिए दिलीप ने राज्यभार मन्त्रियों को समर्पित किया।

आपने क्या सीखा

- राजा दिलीप के प्रजा वात्सल्य को जाना।
- राजा दिलीप के लोकोत्तर गुणों को जाना।
- राजा दिलीप द्वारा मंत्रियों को राज्यभार सौंपना एवं उनकी पत्नी सुदक्षिणा के विषय में जाना।

पाठान्त प्रश्न

1. दिलीप का अर्थसाधन और कामसाधन धर्म ही सिद्ध करते थे, विचार कीजिए।
2. ''द्वेष्योपि सम्मत:'' इत्यादि श्लोक में उपमा अलंकार सिद्ध कीजिए।
3. दिलीप किस प्रकार प्रजा के पिता थे?
4. दिलीप और देवेन्द्र ने कैसे दोनों लोकों का पोषण किया?
5. दिलीप के सभी गुण कैसे परार्थकफल है?

6. कलत्रवन्तम् इत्यादि श्लोक को आधार बनाकर-दिलीप का भोगपरांगमुखत्व का विचार कीजिए।

7. दिलीप ने क्यों राज्य भार मंत्रियों का समर्पित किया?

8. संक्षेप में पाठ सार लिखिए।

9. स्तम्भों के लिखित पदों का मेल कीजिए।

स्तम्भ (क)	स्तम्भ (ख)
1. दुदोह	1. अनुकृतवन्तः
2. दधतु	2. पृथ्वी
3. अनुययुः	3. स्वर्ग्लोकम्
4. तस्कर	4. उदगक्षता अंगुली
5. दिलीप	5. दुग्धवान्
6. इन्द्र	6. औषधम्:
7. दुष्टः प्रि	7. मगधवंशजा
8. शिष्टः शत्रुः	8. पुपुषतुः
9. सुदक्षिणा	9. चोर्यवृतिः।

उत्तरः- 1-5, 2-8, 3-1, 4-9, 5-2, 6-3, 7-6, 8-4, 9-7

पाठगतप्रश्नों के उत्तर

6.1

1. दिलीप शिक्षा, रक्षा व भरण के कारण प्रजा के पिता थे।

2. लोगों के पिता दिलीप थे।

3. विनयस्थ आधान विनयाधनभ् षष्ठीतत्पुरप समास, तस्मात- विनयाधनात्।

4. 3

6.2

5. दिलीप दण्डयोग्य स्थिति में दण्डवान् थे।

6. दिलीप का अर्थ और काम धर्म ही था।

7. दण्डयत् मूल शब्द षष्ठी विभक्ति एक वचन है।

8. 1

6.3

9. दिलीप यज्ञ के लिए पृथ्वी को दुहते थे।

10. दो लोको के नाम स्वर्ग लोक और पृथ्वी लोक।

11. दुदोह-दुह्धातु लिट्लकार का रूप है।

12. 4

6.4

13. दिलीप के राज्य में तस्करता शब्द सुनने मात्र के लिए था।

14. अनु-उपसर्ग 'या'धातु लिट लकार प्रथम पुरुष बहुवचन रुप है। इसका अर्थ अनुकरण किया।

15. किल + अनुययु: + तस्य

6.5

16. दिलीप के शत्रु यदि शिष्ट है तो औषधिवत् ग्राह्य था।

17. दिलीप के आत्मीय दुष्ट हो तो उदगक्षता अंगुली के समान त्याज्य थे।

18. प्रिय: + अपि + आसीत् + अंगुली + इव + उरगक्षता।

19. 2

6.6

20. ब्रह्मा ने दिलीप की पंचमहाभूतसामग्री से रचना की। अत: दिलीप के सभी गुण परार्थकफल थे।

21. वि उपसर्ग, धा धातु लिट् लकार प्रथम पुरुष एक वचन रुप है।

22. महन्ति च तानि भूतानि महाभूतानि-कर्मधारय समास,। महाभूतानां समाधि: महाभूत समाधि :-षष्ठी तत्पुरूष समाष, तेन महाभूतसमाधिना।

23. दिलीप पृथ्वी को एक नगरी के समान शासन करते थे।

6.7

24. इस श्लोक में दिलीप के राज्य अर्थात् समग्र पृथ्वी एक पुरी से उपमित है। यह दिलीप का राज्य उपमेय है। एकपुरी उपमान है, इव उपमावाचक शब्द है। अत: उपमा अलंकार है।

टिप्पणी

25. अपरिखाः परिखाः यथा सम्पद्यन्ते तथा कृताः इस विग्रह में चित प्रत्यय से परिखीकृता रुप बनता है। परिखी कृताः सागराः यस्याः सा परिखीकृत सागरा:- बहुव्रीहि समास, तां परिखीकृत सागरम्।

6.8

26. दिलीप पत्नी मगध वंश में पैदा हुई।

27. सुदक्षिणा दक्षिणा से उपमित है।

28. अविद्यमानः ध्वर यस्मिन् सः अध्वरः न बहुव्रीहिसमास, तस्य अध्वरस्य। यज्ञ इसका अर्थ है।

29. 2

6.9

30. दिलीप सुदक्षिणा और राजलक्ष्मी से कलत्रवान् था।

31. इस श्लोक से दिलीप को भोगपरांगमुखत्वम् सूचित होता है।

32. कलत्रवन्तम् + आत्मानम् + अवरोधे।

6.10

33. दिलीप विलम्बितफल मनोरथ से काल व्यतीत किया।

34. दिलीप अपने अनुरूप सुदक्षिणा में अपने जन्म से उत्सुक थे।

35. आत्मनो जन्म यस्य स आत्म जन्मा-व्यधिकरण बहुव्रीहि समास। अथवा आत्मनः जन्म-षष्ठी तत्पुरूष समास। आत्मजन्मनि समुत्सुकः आत्म जन्म समुत्सुक:- सप्तमी तत्पुरुष समास।

6.11

36. जगत का भार गुर्वी था।

37. सन्तानार्थय - अर्थ शब्द का अर्थ-प्रयोजन है।

38. नि उपसर्ग पूर्वक क्षिप् धतु लिट् लकार कर्म में प्रथम पुरूष एक वचन रूप है।